

॥ महामृत्युञ्जय जप विधानम् ॥

हिंदू धर्म में दो मंत्रों महामृत्युञ्जय तथा गायत्री मंत्र की बड़ी भारी महिमा बताई गई हैं। कहा जाता है कि इन दोनों मंत्रों में किसी भी एक मंत्र का सवा लाख जाप १२५०० आहुति १२५० तर्पण १२५ मार्जन १२ ब्राम्हण भोजन करके जीवन की बड़ी से बड़ी इच्छा को पूरा किया जा सकता है। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि भारतीय ऋषि-मुनियों ने इन दोनों मंत्रों को मिलाकर एक अन्य मंत्र महामृत्युञ्जय गायत्री मंत्र अथवा मृत संजीवनी मंत्र का निर्माण किया था। इस मंत्र को संजीवनी विद्या के नाम से जाना जाता है।

शिवपुराण में सतीखण्ड में इस मंत्र को 'सर्वोत्तम' महामंत्र की संज्ञान से विभूषित किया गया है - मृत संजीवनी मंत्रों मम सर्वोत्तम स्मृतः। इस मंत्र को शुक्राचार्य द्वारा आराधित 'मृतसंजीवनी विद्या' के नाम से भी जाना जाता है। नारायणणोपनिषद् एवं मंत्र सार में - मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्यमृत्युञ्जय स्मृतः अर्थात् मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के कारण इन मंत्र योगों को 'मृत्युञ्जय' कहा जाता है। सामान्यतः मंत्र तीन प्रकार के होते हैं-

वैदिक, तांत्रिक, एवं शाबरी। इनमें वैदिक मंत्र शीघ्र फल देने वाले हैं। मृत्युञ्जय जप, प्रकार एवं प्रयोगविधि का मंत्र महोदधि, मंत्र महार्णव, शारदातिक, मृत्युञ्जय कल्प एवं तांत्र, तंत्रसार, पुराण आदि धर्मशास्त्रीय ग्रंथों में विशिष्टता से उल्लेख है।

मृत्युञ्जय मंत्र तीन प्रकार के हैं -

१. पहला मंत्र तीन व्यह्वति - भूर्भुवः स्वः से सम्पुटित होने के कारण **मृत्युञ्जय**,
 - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
२. दूसरा ॐ हौं जूं सः (त्रिबीज) और भूर्भुवः स्वः (तीन व्याहृतियों) से सम्पुटित होने के कारण '**मृतसंजीवनी**' तथा उपर्युक्त प्रत्येक अक्षर के प्रारंभ में ॐ का सम्पुट लगाया जाता है।
 - ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ
३. महामृत्युञ्जय गायत्री (**संजीवनी**) मंत्र (शुक्राचार्य द्वारा आराधित)
 - ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे
ॐ तत्सर्वितुर्वरेण्यं ॐ सुगन्धिपुष्टिवर्धनम्
ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान्
ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्
ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ ॥

महामृत्युञ्जय मंत्र के 33 अक्षर हैं जो महर्षि वशिष्ठ के अनुसार 33 कोटि (प्रकार) के देवताओं के घोटक हैं। महामृत्युञ्जय मन्त्र से शिव की आराधना करने पर समस्त देवी देवताओं की आराधना स्वमेव हो जाती है। उन तैंतीस कोटि देवताओं में 8 वसु, 11 रुद्र, 12 आदित्य, 1 प्रजापति तथा 1 षटकार हैं।

इन तैंतीस कोटि देवताओं की सम्पूर्ण शक्तियाँ महामृत्युञ्जय मंत्र से निहीत होती है, जिससे महा महामृत्युञ्जय का पाठ करने वाला प्राणी दीर्घायु तो प्राप्त करता ही हैं। साथ ही वह नीरोग, ऐश्वर्य युक्ता धनवान भी होता है। महामृत्युञ्जय का पाठ करने वाला प्राणी हर दृष्टि से सुखी एवम समृद्धिशाली होता है। भगवान शिव की अमृतमययी कृपा उस निरन्तर बरसती रहती है।

महामृत्युञ्जय मंत्र यजुर्वेद के रूद्र अध्याय स्थित एक मंत्र है। इसमें शिव की स्तुति की गयी है। शिव को 'मृत्यु को जीतने वाला' माना जाता है। मंत्र इस प्रकार है

- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

महा मृत्युञ्जय मंत्र का अक्षरशः अर्थ;

- त्र्यम्बकम् - त्रि-नेत्रों वाला (कर्मकारक)
- यजामहे - हम पूजते हैं, सम्मान करते हैं, हमारे श्रद्धेय,
- सुगन्धिम - मीठी महक वाला, सुगन्धित (कर्मकारक),
- पुष्टि - एक सुपोषित स्थिति, फलने-फूलने वाली, समृद्ध जीवन की परिपूर्णता
- वर्धनम् - वह जो पोषण करता है, शक्ति देता है, (स्वास्थ्य, धन, सुख में) वृद्धिकारक; जो हर्षित करता है, आनन्दित करता है।
- उर्वारुकम् - ककड़ी (कर्मकारक),
- इव - जैसे, इस तरह,
- बन्धना - तना (लौकी का); ("तने से" पंचम विभक्ति - वास्तव में समाप्ति - द से अधिक लंबी है जो संधि के माध्यम से न/ अनुस्वार में परिवर्तित होती है),
- मृत्युर - मृत्यु से,
- मुक्षिया - हमें स्वतंत्र करें, मुक्ति दें,
- मा - न,
- अमृतात् - अमरता, मोक्ष,

कामना विशेष में जप संख्या

- राष्ट्र विनाशोन्मुख की स्थिति में आ गया हो, देश, ग्राम में महामारी (बीमारी), आने पर, उसकी शान्ति के लिए **एक करोड़ महामृत्युञ्जय** जप कराना चाहिए।
- ज्योतिष के अनुसार यदि जन्म, मास, गोचर और दशा, अंतर्दशा, स्थूलदशा, ग्रहपीडा, षडाष्टक, मेलापक में नाडीदोष आदि आता हो तो **सवा लाख महामृत्युञ्जय** जप करावे।
- किसी प्रकार की भी बीमारी या महामारी से मुक्ति पाने हेतु तथा अनिष्ट सूचक दुःख, स्वप्न देखने पर शुभफल की प्राप्ति हेतु **सवा लाख महामृत्युञ्जय** जप करावे।
- अपने अभीष्ट-सिद्धि, पुत्र-पौत्रादी की प्राप्ति, राज्य-प्राप्ति, मनोनुकूल सम्मान प्राप्ति एवं धन प्राप्त करने के लिए **सवा लाख महामृत्युञ्जय** जप करावे।
- अपमृत्यु (अर्थात् अग्नि में जलकर, पानी में डूबकर, सर्प आदि किसी विषधर जन्तु के काटने से मृत्यु होने पर) से मुक्ति पाने के लिए **दस हजार महामृत्युञ्जय** जप करावे।
- अपने विषय में, स्वजनों और इष्ट-मित्रों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का भी अनिष्ट सूचक समाचार मिलने पर तथा सफल यात्रा के लिए **एक हजार महामृत्युञ्जय** जप करावे।

विविध कामना विशेष में हवनीय द्रव्य

- सवा लाख महामृत्युञ्ज जप हेतु दूध, दही, दूर्वा, बिल्वपत्र, तिल, खीर, पीली सरसों, बड, पलास तथा खैर की समिधा (लकड़ी) को क्रमशः शहद में डुबोकर हवन करें।
- किसी भी बिमारी से सद्यः मुक्ति पाने हेतु, शत्रु पर विजय, दीर्घायुष्य, पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति, धन-धान्यदि की उपलब्धि हेतु चार-चार अंगुल गुरुच की समिधा से हवन करें।
- मनचाही लक्ष्मी प्राप्ति के लिए बिल्वफल, ब्रह्मत्व सिद्धि में पलाश, प्रचुर धन प्राप्ति के लिए वट, सौन्दर्य के लिए खैर, अधर्मादि पाप विनास के लिए तिल, शत्रु विनास में सरसों, यशः प्राप्ति हेतु खीर, कृत्या (जादू-टोना, पिशाच आदि) विनास हेतु दही से हवन करें।
- रोग क्षय हेतु तीन-तीन दूर्वा से, प्रबल ज्वर से मुक्ति हेतु चिचिडा की लकड़ी से पकायी हुई खीर से, किसी भी प्रकार की बीमारी से मुक्ति पाने हेतु काश्मीरी फूल (पुष्कर) की तीन-तीन लकड़ी तथा दुध और अन्न की आहुती करनी चाहिए।
- किसी व्यक्ति को अपने वश में करना हो तो गाय के दूध और घी मिश्रित दूर्वा से होम करें।
- हवन के उपरान्त दशांश तर्पण एवं तद दशांश मार्जन जरूर करें।

महामृत्युंजय मंत्र जाप में सावधानियाँ

- जो भी मंत्र जपना हो उसका जप उच्चारण की शुद्धता से करें। मंत्र का उच्चारण होठों से बाहर नहीं आना चाहिए। यदि अभ्यास न हो तो धीमे स्वर में जप करें।
- एक निश्चित संख्या में जप करें। पूर्व दिवस में जपे गए मंत्रों से, आगामी दिनों में कम मंत्रों का जप न करें। यदि चाहें तो अधिक जप सकते हैं।
- रुद्राक्ष की माला पर ही जप करें। माला को गोमुखी में रखें। जब तक जप की संख्या पूर्ण न हो, माला को गोमुखी से बाहर न निकालें।
- जपकाल में शिवजी की प्रतिमा, तस्वीर, शिवलिंग या महामृत्युंजय यंत्र पास में रखना अनिवार्य है। उसके सामने धूप-दीप जलते रहना चाहिए।
- जपकाल में दुग्ध मिले जल से शिवजी का अभिषेक करते रहें या शिवलिंग पर चढ़ाते रहें।
- महामृत्युंजय मंत्र के सभी प्रयोग पूर्व दिशा की तरफ मुख करके कुशा के आसन के ऊपर बैठकर करें।
- जिस स्थान पर जपादि का शुभारंभ हो, वहीं पर आगामी दिनों में भी जप करना चाहिए।
- जपकाल में ध्यान पूरी तरह मंत्र में ही रहना चाहिए, मन को इधर-उधर न भटकाएँ।
- जपकाल में आलस्य व उबासी को न आने दें। मिथ्या बातें न करें।
- जपकाल में स्त्री सेवन न करें। मांसाहार त्याग दें।

॥ षोडशोपचार शिवपूजन विधि: ॥

- पवित्रकरणम् -** ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः वाह्याभंतरः शुचिः।
- आचम्य -** ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः (आचमन करें)
ॐ हृषीकेशाय नमः (हाथ धो लें)
- आसन शुद्धि -** ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
- पवित्री (पैती) धारणम्** ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण
सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पूनेतच्छकेयम् ॥
- यज्ञोपवित -** ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।
आयुष्यं मग्नं प्रतिमुन्व शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेजः॥
- शिखाबन्धन -** ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।

तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धि कुरुव मे ॥

तिलक/चन्दन - चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम् ।
आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥१॥

- ॐ आदित्या वसो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥२॥

रक्षाबन्धनम् - येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचलः ॥१॥

- ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥२॥

भद्रसूक्त / स्वस्ति-वाचन

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे ॥१॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना गुं रातिरभिनो निवर्तताम् ।
देवाना गुं सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥
तान् पूर्वायां निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमसिधम् ।
अर्यमणं वरुणं गुं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥३॥
तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिषण्या युवम् ॥४॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पुषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥
पृषदश्वा मरुतः पृथिमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ॥७॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां गुं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥८॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥९॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥१०॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१२॥

सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धुम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये ॥

अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥

सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् । येषां हृदयस्थो भगवान् मंगलायतनो हरीः ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलम् तदेव लक्ष्मीपते तेन्द्नी युगं स्मरामि ॥

वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ । निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

ॐ श्रीमन् महागणाधीपतये नमः, इष्ट देवताभ्यो नमः, कुल देवताभ्यो नमः, ग्राम देवताभ्यो नमः,

स्थान देवताभ्यो नमः, वास्तु देवताभ्यो नमः, वाणी हिरण्यगर्भाभ्याम् नमः, लक्ष्मी नारायणाभ्याम्

नमः, उमा महेश्वराभ्याम् नमः, शची पुरंदाराभ्याम् नमः, मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो

देवेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः, एतत् कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः

संकल्प

- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, ॐ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे, अमुकदेशे, अमुकनाम्नि नगरे, (ग्रामे वा) बौद्धावतारे अमुक शालीवाहन शके, अस्मिन्वर्तमाने, अमुक नाम संवत्सरे, अमुका यने, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक गोत्रः, अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्ता, दासो वा) मम् श्रुति-स्मृति-पूराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं आयु-आरोग्य-एश्वर्य अभि वृद्ध्यर्थं श्री साम्ब सदाशिव देवता प्रीत्यर्थं च यथामिलितोपचारद्रव्यैः शिवपूजनमहं करिष्ये ।

रक्षा विधानम्

- अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे ॥

दिप ध्यानम्

- शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखं सम्पदाम् ।
मम बुद्धि विकाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते ॥१॥

- दीपज्योतिः परब्रह्मः दीपज्योतिः जनार्दनः।
दीपोहरतिमे पापं दीपज्योतिर् नामोस्तुते ॥२॥

सूर्यनमस्कार

- आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्मृतममर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

शंख पूजनम् - ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नो शंखः प्रचोदयात् ॥

- त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥

घंटी पूजनम् - आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत् ॥

कलश ध्यान - ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्विर्भः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश गुं समान आयुः प्रमोषीः।

- कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्र समाश्रिताः ।
मूलेतस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणा स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्विपा वसुंधरा ।
ऋग्वेदो यजुर्वेदो सामवेदो अथर्वणाः ॥
अडैश्च सहिता सर्वे कलशान्तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः,
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥

- अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ॐ भूभुवः स्वः भो वरुण !
इहागच्छ इह तिष्ठ स्थापयामि, पूजयामि मम पूजां गृहाण, ॐ अपां पतये वरुणाय नमः

गणेश ध्यानम् - गणानां त्वा गणपतिं गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं गुं हवामहे ।
निधीनां त्वा निधिपतिं गुं हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

- गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥
- विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटी समप्रभा निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व-कार्येषु सर्वदा ॥

षोडशमातृका ध्यानम् गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः ॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

नवग्रह ध्यानम् - ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु शशि भूमि-सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु ॥

- शिव ध्यानम्** - ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलागं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वासनं,
विश्वाधं विश्ववन्धं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥
- प्राणप्रतिष्ठा** - ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्व रिष्टं यज्ञं गुं समिमं दधातु ।
विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥
- अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन ॥
- आह्वान** - सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं गुं सर्वं तस्पृत्वा त्यतिष्ठ दशाङ्गुलम् ॥
- आसन** - पुरुषऽएवेदं गुं सर्वं व्यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥
- पाद्य** - एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥
- अर्घ्य** - त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शनानशनेऽभि ॥
- आचमन** - ततो विराडजायत विराजोऽधि पूरुषः ।
स जातोऽत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥
- स्नान** - तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तान्श्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥
- दुग्ध स्नान** - ॐ पयः पृथिव्याम् पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥
- दधि स्नान** - ॐ दधिक्रोवणो अकारिषं जिष्णोरश्चस्य व्वाजिनः ।
सुरभि नो मुख्रा करत् प्रणाअयु गुं षि तारिषत् ॥
- घृत स्नान** - ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घिते श्रितो घृतम्ब्वस्य धाम ।
अनुष्वधमावह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वविक्ष हव्वयम् ॥
- मधु स्नान** - ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माद्धवीर्नः सन्त्वोषधीः ।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव गुं रजः । मधु द्यौरस्तुनः पिता ।
मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माद्धवीर्गावो-भवन्तु नः ।

- शर्करा स्नान -** ॐ अपा गुं रसमुद्वयस गुं सूर्ये सन्तः गुं समाहितम्।
अपा गुं रसस्ययो रसस्तमवो गृह्णणाम्येष तेयोनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।
- इक्षुसार समुद्धूता शर्करा पुष्टि कारिका ।
मलापहारिका दिव्य स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
- पंचामृत स्नान -** ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यान्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित ॥
- पयो दधि घृतं मधु चैव च शर्करा मधु संयुतम् ।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
- गन्धोदक स्नान -** ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षा, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
- शुद्धोदक स्नान -** ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनः। श्वेतः श्वेताक्षो रुणस्ते
रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।
- वस्त्रम् -** सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यतां ॥
- उपवस्त्रम् -** ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासोग्ने विश्वरूप गुं संव्ययस्व विभावसो ॥
- यज्ञोपवितम् -** ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
- गंध / चंदनम् -** ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षा, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
- ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वां मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्षमाद् मुच्यत् ॥
- अक्षतम् -** ॐ अक्क्षन्नमीमदन्त ह्यवप्त्रियाऽअधुषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न्नविष्ठया मती योजान् विन्द्रतेहरी ॥
- अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
- सुगन्ध द्रव्यम् -** ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
- ॐ अ गुं शुनाते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः ।

- गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽअच्छ्युतः ॥
- पुष्प / पुष्पमाला** ॐ मन्दार-पारिजाताद्यैः, अनेकैः कुसुमैः शुभैः।
पूजयामि शिवे, भक्त्या, कमलायै नमो नमः ॥
- माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृह्यन्तां पूजनाय भोः ॥
- दूर्वा** - तृणकान्त मणि प्रख्य हरित अभिः सुजातिभिः।
दूर्वाभिराभिर्भवतीम पूजयामि महेश्वरि ॥
- ॐ काण्डात काण्डात प्ररोहन्ती परुषःपरुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥
- बिल्वपत्र** - ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यरय चाहनन्यायच ॥
- ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् ।
त्रिजन्मपाप संहारमेक बिल्वं शिवार्पणम् ॥
- सौभाग्य द्रव्य** - ॐ अहिरीव भोगैः पर्येति बाहुन्ज्यावा हेतिम्परिवाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वावयुनानिविद्वान पुमान पुमा गंगवहे समपरिपातुविश्वतः ॥
- अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दमेव च ।
अबीरेणर्चितो देव क्षतः शान्ति प्रयच्छमे ॥
- धूपम्** - धूसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वामः ।
देवानामसि वह्नितमं गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥
- ॐ वनस्पति-रसोद्-भूतः, गन्धाद्यो गन्धः उत्तमः ।
आग्नेयः सर्व-देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
- दीप** - ॐ अग्निर्ज्योतिः ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्योर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः
सूर्यः सूर्योर्ज्योतिः स्वाहा ॥
- नैवेद्य** - ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं गूं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँः अकल्पयन् ॥
- अखण्ड ऋतुफल** ॐ याफलिनिर्याऽफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व गूं ह सः ॥
- ताम्बूल / पूगीफल** ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥

- दक्षिणा** - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥
- नीराजंन** - ॐ आ रात्रि पार्थिव गूं रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा गूं सि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः ॥
- ॐ इदं गुं हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीरं गुं सर्वगणं गुं स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि
पशुसति लोकसन्ध भयसनिः। अग्नि प्रजा बहुलां मे करोत्वन् न्यतो रेतोऽस्मासु धत्ता।
- जल आरती** - ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं गुं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्मा शान्तिः सर्वं गुं शान्तिः शान्तिरेव
शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।
- पुष्पाञ्जलि** - ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
ॐ राधाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रणाय कुर्महे । समे कामान् कामकामाय
मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ स्वास्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं
समन्तपर्यायी स्वात् सार्वभौमः। सार्वायुष आन्तादा परार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यान्ताया
एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगितो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन्नगृहे । आविक्षितस्य
कामप्रेविश्वेदेवाः सभासद इतिः।
ॐ विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहु रुत विश्वतस्पात ।
सम्बाहूभ्यां धमति सम्पत्त्रैर्द्यावा भूमी जनयं देव एकः।
नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
- प्रदक्षिणा** - ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषां गुं सहस्रयोजनेऽवधन्वा नितन्मसि ॥
- समर्पण** - अनेन शिवपूजनाख्येन कर्मणा भगवान् साम्बसदाशिव प्रीयताम्, न मम । शिवाऽर्पणमस्तु ।

॥ महामृत्युञ्जय जप विधानम् ॥

- संकल्प** - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, ॐ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया

प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तकदेशे अमुकक्षेत्रे, अमुकदेशे, अमुकनाम्नि नगरे, (ग्रामे वा) बौद्धावतारे अमुक विक्रमशके, अस्मिन्वर्तमाने, अमुक नाम संवत्सरे, अमुका यने, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक करणे, अमुक राशि स्थिते सुर्य, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, अमुक राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अमुक गोत्रः, अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्ता, दासो वा) मम् जन्मलग्न चन्द्रलग्नाद् ये केचन चतुर्थाऽष्टम्-द्वादश स्थान स्थित क्रूरग्रहास्तेषां शान्ति पूर्वकं द्वितीय-सप्तम-एकादश स्थान स्थित शुभ फल प्राप्त्यर्थं तथा च मम शरीरे ज्वरादि-रोग निवृत्ति पूर्वकम् आयु-आरोग्य लाभार्थं वा धन पुत्र यश सौख्यादिकि कामना सिद्ध्यर्थं श्री महामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं च ब्राह्मण द्वारा यथा संख्याकं (अष्टोत्तरशतम्, एकविंशति सहस्रं, सपादलक्षं वा) महामृत्युञ्जय मन्त्र जपमहं कारयिष्ये ।

विनियोग - अस्य श्री महामृत्युञ्जयमंत्रस्य वशिष्ठ ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्री त्र्यम्बकरुद्रो देवता । श्री बीजम् । ह्रीं शक्तिः । मम अनीष्टसहृयिर्थे जपे न्यासे च विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यासः- ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । श्री त्र्यम्बकं देवतायै नमः हृदये । त्रं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं बीजाय नमः नाभौ । जूं शक्तये नमः पादयोः । सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करादि न्यासः - ॐ त्र्यम्बकम् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । यजामहे तर्जनीभ्यां नमः । सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं मध्यामाभ्यां नमः । उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः । मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठाभ्यां नमः । माऽमृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यासः- ॐ त्र्यम्बकम् हृदयाय नमः । यजामहे शिरसे स्वाहा । सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं शिखायै वषट् । उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुम् । मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट् । माऽमृतात् अस्त्राय फट् ।

पद न्यासः - ॐ त्र्यम्बकम् शिरसि । यजामहे भ्रुवोः । सुगन्धिं नेत्रयोः । पुष्टिवर्धनं मुखे । उर्वारुकं गण्डयोः । इव हृदये । बन्धनात् जठरे । मृत्योर्लिङ्गे । मुक्षीय उर्वो । मा जान्वोः । अऽमृतात् पाजयोः ।

ध्यानम् - हस्ताम्भोज युगस्थ कुंभयुगलादुदधत्य तोयं शिरः
सिचन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ ।
अक्षस्त्रङ्मृगहस्तमंबुजगतंमूर्धस्थ चन्द्रस्त्रवत्

पीयूषार्द्रं तनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम् ॥१॥
 चन्द्रोदभासित मूर्धजं सुरपतिं पीयूषमात्रं वहद्,
 हस्ताब्जेन दधत् सुदिव्यममलं हास्यासपंकेरुहम् ।
 सूर्येन्द्राग्नि विलोचनं करतले पाशाक्ष सूत्राकुंशा-
 म्भोज विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जय संस्मरे ॥२॥

जपमाला प्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी ।
 चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
 ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
 जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
 उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥१॥

- ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
 ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
 उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
 ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥२॥
- ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे
 ॐ तत्सर्वितुर्वरेण्यं ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
 ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान्
 ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्
 ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ ॥३॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि
 साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।
 गुहातिगुहागोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
 सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरी ॥

समर्पण

- अनेन श्रीमहामृत्युञ्जय जपाख्येन कर्मणा भगवान् श्री महा मृत्युञ्जय
 साम्बसदाशिवः प्रीयताम्, न मम । शिवाऽर्पणमस्तु ।

हवनम् विधानम्

तदनन्तरं जपसांगंता सिद्ध्यर्थं यथाकामना द्रव्येण महामृत्युञ्जय मन्त्र
 द्वारा शताक्षरीमन्त्रेण च जपदशांश दुग्ध घृत तिल शर्करा संसिक्ता अपामार्ग खण्ड
 समिद्धिर्हवनं, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, दशांश ब्राह्मण भोजनं च कुर्यात् ।

॥ मृत्युञ्जय स्तोत्रम् - १ ॥

विनियोग

- ॐ अस्य श्रीसदाशिवस्तोत्रमन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीसदाशिवो

देवता । गौरी शक्तिः । मम समस्तमृत्युशान्त्यर्थे जपे विनियोगः।”

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृङ्गनिकेतनं शिण्जिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥१॥

पंचपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजवदयशोभितं भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम्।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥२॥

मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं पंकजनासनपद्मलोचनपूजिताङ्घ्रिसरोरुहम्।
देवसिद्धतरंगिणीकरसिक्तशीतजटाधरं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥३॥

कुण्डलीकृतकुण्डलीश्वरककुण्डलं वृषवाहनं नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥४॥

यक्षराजसखं भगक्षिहरं भुजंगविभूषणं शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥५॥

भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंघनिबर्हणं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥६॥

भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।
भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्वाकृतिं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥७॥

विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं संहरन्तमथ प्रपंचमशेषलोकनिवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥८॥

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥९॥

देवदेवं जगन्नाथं देवेशमृषभध्वजम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१३॥

कालकण्ठं कलामूर्तिं कालाग्निं कालनाशनम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१०॥

अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधारं हरम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१४॥

नीलकण्ठं विरुपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥११॥

आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१५॥

वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१२॥

स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१६॥

॥ मृत्युंजय स्तोत्रम् - २ ॥

विनियोग - ॐ अस्य श्री महा मृत्युंजय स्तोत्र मंत्रस्य । श्री मार्कांडेय ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्री मृत्युंजयो देवता । गौरीशक्तिः । मम सर्वारिष्ट समस्त मृत्युशान्त्यर्थं सकलैश्वर्यं प्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः

ध्यानम्

चंद्रर्काग्निलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयांतः स्थितम्, मुद्रापाश मृगाक्ष सत्रविलसत् पाणिं हिमांशुं प्रभुम् ।
कोटींदु प्रहरत् सुधाप्लुत तनुं हारादिभोषोज्वलं, कांतं विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ॥

ॐ रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकंठमुमापतिम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१॥

नीलकंठं कालमूर्तिं कालज्ञं कालनाशनम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥२॥

नीलकंठं विरूपाक्षं निर्मलं निलयप्रदम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥३॥

वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥४॥

देवदेवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥५॥

गंगाधरं महादेवं सर्पाभरणभूषितम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥६॥

त्र्यक्षं चतुर्भुजं शांतं जटामुकुटधारणम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥७॥

भस्मोद्भूलितसर्वांगं नागाभरणभूषितम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥८॥

अनंतमव्ययं शांतं अक्षमालाधरं हरम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥९॥

आनंदं परमं नित्यं कैवल्यपददायिनम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१०॥

फलश्रुति

मार्कण्डेय कृतं स्तोत्रं यः पठेत् शिवसन्निधौ ।

तस्य मृत्युभयं नास्ति न अग्निचोरभयं क्वचित् ॥२०॥

शतावृतं प्रकर्तव्यं संकटे कष्टनाशनम् ।

शुचिर्भूत्वा पठेत् स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥२१॥

मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम् ।

अर्धनारीश्वरं देवं पार्वतीप्राणनायकम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥११॥

प्रलयस्थितिकर्तारं आदिकर्तारमीश्वरम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१२॥

व्योमकेशं विरूपाक्षं चंद्रार्द्धं कृतशेखरम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१३॥

गंगाधरं शशिधरं शंकरं शूलपाणिनम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१४॥

अनाथं परमानंदं कैवल्यपददायिनम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१५॥

स्वर्गापवर्गं दातारं सृष्टिस्थित्यांतकारिणम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१६॥

कल्पायुर्देहि मे पुण्यं यावदायुररोगताम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१७॥

शिवेशानां महादेवं वामदेवं सदाशिवम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१८॥

उत्पत्तिं स्थितिसंहारं कर्तारमीश्वरं गुरुम् ।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१९॥

जन्ममृत्यु जरारोगैः पीडितं कर्मबंधनैः ॥२२॥

तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड ।

इति विज्ञाप्य देवेशं त्र्यंबकाख्यममं जपेत् ॥२३॥

नमः शिवाय सांबाय हरये परमात्मने ।

प्रणतक्लेशनाशाय योगिनां पतये नमः ॥२४॥

॥ इती श्री मार्कण्डेयपुराणे महा मृत्युञ्जय स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ महामृत्युञ्जय कवचम् ॥

भैरव उवाच

शृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम् । महामृत्युञ्जयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम् ॥१॥

यं धृत्वा यं पठित्वा च श्रुत्वा च कवचोत्तमम् । त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि ॥२॥
तदेववर्णयिष्यामि तव प्रीत्या वरानने । तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने ॥३॥

विनियोगः अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयकवचस्य श्रीभैरव ऋषिः । गायत्रीछन्दः । श्रीमहामृत्युञ्जयो महारुद्रो देवता ।
ॐ बीजं । जूं शक्तिः । सः कीलकं । हौमिति तत्त्वं । चतुर्वर्गसाधने मृत्युञ्जय कवच पाठे विनियोगः ।

चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रुद्रं भाले विचिन्त्य तम् ।
तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ॥१॥
ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम ।
ॐ श्रीं शिवो ललाटं मे ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः ॥२॥
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दी मेऽवताच्छ्रुती ।
त्रिलोचनोऽवताद् गण्डौ नासां मे त्रिपुरान्तकः ॥३॥
मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः ।
हनुं मे हाटकेशनो मुखं बटुकभैरवः ॥४॥
कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु ।
स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु ॥५॥
नखान् मे गिरिजानाथः पायादङ्गुलिसंयुतान् ।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम ॥६॥
कुक्षिं कुबेरवरदः पाश्र्वौ मे मारशासनः ।
शर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु ॥७॥
शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः ।
कटिं कालान्तकः पायादूरु मेऽन्धकघातकः ॥८॥
जागरूकोऽवताज्जानू जङ्घे मे कालभैरवः ।
गुल्फो पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥९॥

फलश्रुति

सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम् ॥१८॥
य इदं च पठेन्मन्त्री कवचं वार्चयेत् ततः ।
तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्ट सिद्धयः ॥१९॥
रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रूञ्जयं लभेत् ।
जयं कृत्वा गृहं देवि सम्प्राप्स्यति सुखी पुनः ॥२०॥

पादादिमूर्धपर्यन्तमघोरः पातु मे सदा ।
शिरसः पादपर्यन्तं सद्योजातो ममावतु ॥१०॥
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः ।
पूर्वं बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः ॥११॥
पश्चिमे पार्वतीनाथो ह्युत्तरे मां मनोन्मनः ।
ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेय्यामग्निलोचनः ॥१२॥
नैऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः ।
उर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः ॥१३॥
दशदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयश्च माम् ।
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये ॥१४॥
पायाद् ओं जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः ।
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ॥१५॥
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः ।
अर्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोमयः ॥१६॥
सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः हौं मृत्युञ्जयः ।
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥१७॥

महाभये महारोगे महामारीभये तथा ।
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत् कवचमादरात् ॥२१॥
सर्वं तत् प्रशमं याति मृत्युञ्जयप्रसादतः ।
धनं पुत्रान् सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसम्पदः ॥२२॥
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः
इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु ।
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥२३॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युञ्जयकवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ शिव षडाक्षर स्तोत्र ॥

ॐ कार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ऊंकाराय नमो नमः ॥१॥

नमन्ति ऋषयो देवा नमन्त्यप्सरसां गणाः ।

नरा नमंति देवेशं नकाराय नमो नमः ॥२॥

वामे शक्तिधरं वेदं वकाराय नमो नमः ॥५॥

महादेव महात्मानं महाध्यानं परायणम् ।

यत्र तत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः ।

महापापहरं देव मकाराय नमो नमः ॥३॥

यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः ॥६॥

शिवं शांतं जगन्ननाथं लोकानुग्रहकारकम् ।

षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।

शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः ॥४॥

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥७॥

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कंठभूषणम् ।

महामृत्युंजय प्रयोग के लाभ

कलौकलिमल ध्वंस सर्वपाप हरं शिवम् ।

देव पूजा विहीनो यः स नरा नरकं व्रजेत ।

येर्चयन्ति नरा नित्यं तेपिवन्द्या यथा शिवम् ॥

यदा कथंचिद् देवार्चा विधेया श्रद्धायान्वित ॥

स्वयं यजनित चदेव मुत्तेमा स्मृतात्मवजैः ।

मध्यचमा ये भवेद मृत्यैतरधमा साधन क्रिया ॥

जन्मचतारात्र्यौ रगोन्मृदयुतच्चैरव विनाशयेत् ।

कलियुग में केवल शिवजी की पूजा फल देने वाली है। समस्त पाप एवं दुःख भय शोक आदि का हरण करने के लिए महामृत्युंजय की विधि ही श्रेष्ठ है।

गंगातरंग रमणीय जटाकलापं, गौरीनिरंतर विभूषित वामभागम्।

नारायण प्रियमनगं मदापहारं, वाराणसीपुरतपतिं भज विश्वनाथम्॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे। साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः। त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्ब सदा शिवाय नमः, प्रार्थनापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि।

शाम या रात को शिव की पंचोपचार पूजा दूध, गंध, अक्षत, धतुरा, बिल्वपत्र व नैवेद्य अर्पित कर करें। धूप व दीप लगाकर नीचे लिखे षडाक्षरी मंत्र यानी 'ॐ नमः शिवाय मंत्र' की भी महिमा प्रकट करने वाले अद्भुत स्तोत्र का ध्यान कर शिव की आरती करें। यह शिव षडाक्षर स्तोत्र के नाम से भी प्रसिद्ध है।

महामृत्युंजय मंत्र का प्रभाव एवं कथा

बड़ी तपस्या से ऋषि मृकण्ड के पुत्र हुआ। किंतु ज्योतिर्विदों ने उस शिशु के लक्षण देखकर ऋषि के हर्ष को चिंता में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने कहा यह बालक अल्पायु है। इसकी आयु केवल बारह वर्ष है। मृकण्ड ऋषि ने अपनी पत्नी को आश्रित किया-देवी, चिंता

मत करो । विधाता जीव के कर्मानुसार ही आयु दे सकते हैं, किन्तु मेरे स्वामी समर्थ हैं । भाग्यलिपि को स्वेच्छानुसार परिवर्तित कर देना भगवान शिव के लिए विनोद मात्र है।

ऋषि मृकण्ड के पुत्र मार्कण्डेय बढ़ने लगे । शैशव बीता और कुमारावस्था के प्रारंभ में ही पिता ने उन्हें शिव मंत्र की दीक्षा तथा शिवार्चना की शिक्षा दी । पुत्र को उसका भविष्य बताकर समझा दिया कि पुरारि ही उसे मृत्यु से बचा सकते हैं । माता-पिता तो दिन गिन रहे थे । बारह वर्ष आज पूरे होंगे । मार्कण्डेय मंदिर में बैठे थे । रात्रि से ही और उन्होंने मृत्युंजय मंत्र की शरण ले रखी थी -

"त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनमृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।"

सप्रणव बीजत्रय-सम्पुटित महामृत्युंजय मंत्र चल रहा था । काल किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता । यमराज के दूत समय पर आए और संयमनी लौट गए । उन्होंने अपने स्वामी यमराज से जाकर निवेदन किया हम मार्कण्डेय तक पहुंचने का साहस नहीं कर पाए । इस पर यमराज ने कहा कि मृकण्ड के पुत्र को मैं स्वयं लाऊंगा । दण्डधर यमराज जी महिषारूढ़ हुए और क्षण भर में मार्कण्डेय के पास पहुंच गए । बालक मार्कण्डेय ने उन कज्जल कृष्ण, रक्तनेत्र पाशधारी यम को देखा तो सम्मुख की लिंगमूर्ति से लिपट गया ।

"हुम्" एक अद्भुत अपूर्व हुंकार और मंदिर, दिशाएं जैसे प्रचण्ड प्रकाश से चकाचौंध हो गईं । शिवलिंग से तेजोमय त्रिनेत्र गंगाधर चन्द्रशेखर प्रकट हो गए थे और उन्होंने त्रिशूल उठा लिया था और यमराज से कहा कि तुम मेरे आश्रित पर पाश उठाने का साहस कैसे करते हो ? यमराज ने डांट पड़ने से पूर्व ही हाथ जोड़कर मस्तक झुका लिया था और कहा कि मैं आप का सेवक हूँ । कर्मानुसार जीव को इस लोक से ले जाने का निष्ठुर कार्य प्रभु ने इस सेवक को दिया है । भगवान चंद्रशेखर ने कहा कि यह संयमनी नहीं जाएगा । इसे मैंने अमरत्व दिया है । मृत्युंजय प्रभु की आज्ञा को यमराज अस्वीकार कैसे कर सकते थे?

यमराज खाली हाथ लौट गए । मार्कण्डेय ने यह देख लिया । **उर्वारुकमिव बन्धनमृत्योर्मुक्षीय मामृतात्** । वृन्तच्युत खरबूजे के समान मृत्यु के बन्धन से छुड़ाकर मुझे अमृतत्व प्रदान करें । मंत्र के द्वारा चाहा गया वरदान उस का सम्पूर्ण रूप से उसी समय मार्कण्डेय को प्राप्त हो गया। भाग्यलेख-वह औरों के लिए अमिट होगा, किंतु आशुतोष के आश्रितों के लिए भाग्यलेख क्या? भगवान ब्रह्मा भाग्यविधाता स्वयं भगवती पार्वती से कहते हैं-

"बावरो रावरो नाह भवानी।"